भारत स्वातन्त्र्य स्वर्ण-जयन्ती ग्रन्थमाला-7

50

# भारतीय संस्कृति का जीवन्त प्रतीक
# बालीद्वीप

राजेन्द्र मिश्र

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

भारत स्वातन्त्र्य स्वर्णजयन्ती ग्रन्थमाला—7

# भारतीय संस्कृति का जीवन्त प्रतीक
# बालीद्वीप

राजेन्द्र मिश्र

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

1998

# आत्मनिवेदन

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली के कर्मठ निदेशक डॉ० कमलाकान्त मिश्र के आग्रह पर मैंने **सुवर्णद्वीपीय रामकथा** नामक एक ग्रन्थ दो वर्ष पूर्व लिखा था; जिसका प्रकाशन संस्थान की स्थापना के रजतजयन्ती-वर्ष १९९६ में तेईसवें पुष्प के रूप में हुआ। इस वर्ष पुन: जब प्रिय भाई डॉ० मिश्र जी ने **भारत स्वातन्त्र्य स्वर्णजयन्ती ग्रन्थमाला** (Golden Jubilee of India's Independence Series) के अन्तर्गत कोई ग्रन्थ लिखने के लिये स्नेहपूर्वक आमन्त्रित किया तो मेरा मन आह्लाद एवं उत्साह से भर उठा। क्योंकि मैं अपनी कृति **भारतीय संस्कृति का जीवन्त प्रतीक : बालीद्वीप** के प्रकाशनार्थ किसी यशस्वी तथा सम्मान्य प्रकाशक की राह देख रहा था। अपने लेखन की सार्थकता एवं महनीयता का बोध मैं इसलिये कर रहा हूं कि इसका प्रकाशन संस्कृत-वैदुषी के प्रतिष्ठापक राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान द्वारा किया जा रहा है।

बालीद्वीप वर्तमान इण्डोनेशिया राष्ट्र के सत्ताईस प्रान्तों में एक स्वतन्त्र प्रान्त (राज्य) है। भौगोलिक दृष्टि से यह लघुकाय द्वीप पश्चिमस्थ जावा (यवद्वीप) तथा पूर्वस्थ लोम्बोक के बीच में स्थित है। इसका क्षेत्रफल पूर्व से पश्चिम प्राय:२१० कि.मी. तथा दक्षिण से उत्तर प्राय: १२० कि.मी. है। सम्प्रति इस द्वीप में तीस लाख निष्ठावान् शैव-मतानुयायी हिन्दू रहते हैं। शैवों के अतिरिक्त, वैष्णव तथा बौद्ध हिन्दू भी इस द्वीप के मूल निवासी हैं। तेंगनान, टुन्यान तथा व्रातन गांवों में कुछ जनजातीय हिन्दू भी रहते हैं, जिन्हें बाली अगा कहा जाता है। ये लोग स्वयं को ही मूल बाली निवासी मानते हैं तथा शेष बालीवासी हिन्दुओं को मजपहित हिन्दू कहते हैं, जो बाली द्वीप पर मजपहित-साम्राज्य का प्रभुत्व स्थापित होने पर (१४वीं

# विषयानुक्रम


| विषय | | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| | पुरोवाक् | iii |
| | आत्मनिवेदन | v |
| १. | प्रास्ताविक | १ |
| २. | भारतीय संस्कृति का जीवन्त प्रतीक | १४ |
| ३. | अर्धनारीश्वर की विहारभूमि | २५ |
| ४. | आस्था से जुड़े हिन्दू-संस्कारों की भूमि | ३५ |
| ५. | बालीद्वीप की साहित्यिक विरासत | ४७ |
| ६. | राममय सुवर्णद्वीप | ५९ |
| ७. | बालीद्वीप की रामकथा : रामायण ककविन् | ७२ |
| ८. | बालीद्वीपीय रामकथा में हनूमान् | १०५ |
| ९. | बालीद्वीपीय रामकथा में प्रयागवर्णन | ११५ |
| १०. | बालीद्वीपीय कविता में सौन्दर्य-चित्रण | १२२ |
| ११. | बालीद्वीपीय कविता पर कालिदास का प्रभाव | १३४ |
| १२. | बालीद्वीपीय कविता में छन्दोविधान | १४८ |
| १३. | बालीद्वीप की रंगमञ्चीय-परम्परा: अतीत एवं वर्तमान | १७१ |
| १४. | बालीद्वीप के वायांग का सूत्रधार—डलंग | १९० |

पर्वत-शृंखला में ही एक विषाक्त जलस्रोत पैदा कर दिया। जल पीते ही देवता निष्प्राण हो गये।

प्रात: इन्द्र ने यह लोमहर्षक दृश्य देखा। उसने अपने वज्र से पृथ्वी का गर्भ विदारित कर अमृततोया गंगा (तीर्त एम्पुल) को प्रकट किया। उस जल के अभिषेक-मात्र से देवता जीवित हो उठे। मय दानव संत्रस्त होकर पुन: भागा। परन्तु अबकी बार इन्द्र ने उसे बाटुर पर्वत की पीठ पर धर दबोचा। मय मारा गया। उसके शरीर से इतना रक्त प्रवाहित हुआ कि एक नदी (पेतानू) ही बह निकली।

**तीर्त-एम्पुल** सरोवर से बाहर निकलते ही वह जल पकेरिसान नदी के रूप में उत्तर से दक्षिण की ओर बहने लगता है। यही बाली की गंगा है। इसी का पवित्र जल द्वीप के समस्त मन्दिरों एवं संस्कारों में शुद्धि (Mewinten) के लिये प्रयुक्त होता है। पकेरिसान एवं पेतानू की अन्तर्वेदी को ही **अमरावती क्षेत्र** कहा जाता है। साधना एवं **पारलौकिक श्रेय** की दृष्टि से यह भूभाग बालीद्वीप में वाराणसी अथवा श्रीरंग-क्षेत्र जैसा ही स्थान रखता है। अमृततोया गंगा (पकेरिसान) की जहां बाली में इतनी प्रतिष्ठा है, वहीं मय के रक्त से प्रवाहित पेतानू की अप्रतिष्ठा भी है। बाली के कृषक आज भी पेतानू के जल से अपने 'सावाह' (धान के खेत) की सिंचाई नहीं करते।

इस महान् पौराणिक स्थल के अतिरिक्त, बालीद्वीप अन्य अनेक तीर्थों एवं साधना-भूमियों से ओतप्रोत है। कुतरी गांव की महिषासुरमर्दिनी तथा महामेरु पर स्थित शिव-मन्दिर बाली की धर्म चेतना के केन्द्रबिन्दु हैं। प्रत्येक गांव में ब्रह्मा (Pura Desa), विष्णु (Pura Puseh) तथा शिव (Pura Dalem) के मन्दिर हैं। प्रत्येक घर के प्रांगण में बने पूजास्थल (Pimirajan) में भी इहीं त्रिदेवों के मन्दिर हैं। बालीवासी हिन्दू त्रैकालिक पूजा (Puja Trisandya) के अभ्यस्त हैं।

बाली के सामाजिक परिवेश ने मुझे सर्वाधिक आकृष्ट किया। भारत का प्राचीन विश्वविश्रुत वर्णाश्रम धर्म इस द्वीप में देखने को मिला। बाली में आज भी चातुर्वर्ण्य मात्र हैं, जातियां नहीं हैं। ब्राह्मण अभी भी बाली में सर्वोपरि प्रतिष्ठित हैं,

# राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

56-57, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी,
नई दिल्ली-110058